# साहीवाल

कामधेनु सेवक सहदेव भाटिया
अखिल विश्व कामधेनु परिवार, 21 सी,
जयराज कोम्प्लेक्स, सोनी नी चाल,
ओढव मार्ग अहमदाबाद 382415
मोबाइल 9662407242, 8733008557

साहीवाल नस्ल पर पहली बार सरल हिंदी में पुस्तक प्रकाशित कर रहा हूं.

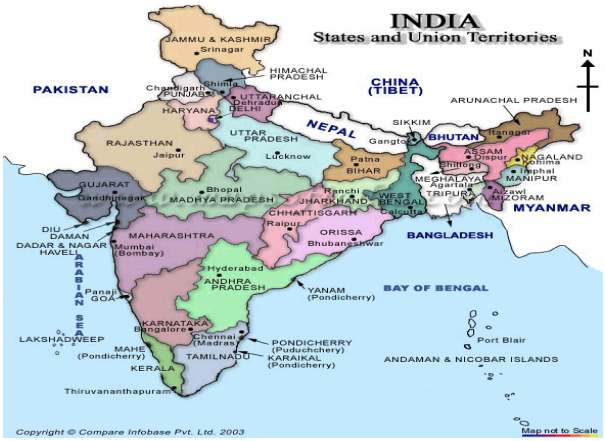


# भारत

# साहीवाल कंजरवेशन ट्रस्ट

साहीवाल कंजरवेशन ट्रस्ट का गठन पंजाब में करना है. साहीवाल गायें पंजाब में बहुत ही कम दूध दे रही हैं.

साहीवाल गाय की नस्ल सुधारने के लिए वेबसाइट, यू ट्यूब, फेस बुक, ब्लोग के माध्यम से विश्व व्यापी अभियान की आवश्यकता है.

सबसे पहले केरल में वैचूर कंजरवेशन ट्रस्ट के माध्यम से 135 संख्या में वैचूर नस्ल को सुरक्षित करने के लिए प्रयत्न प्रारम्भ किया गया है.

# नंदी पार्क

पंजाब में साहीवाल गाय के दूध को बढ़ाने के लिए नंदी पार्क कई स्थानों पर प्रारम्भ करने हैं.

उत्तरप्रदेश में नंदी पार्क सबसे पहले श्रीमती दमयंती गोयल महापौर के द्वारा गाजियाबाद में तैयार किया गया है.

# गो अभ्यारण

पंजाब में मुख्यमंत्री के द्वारा गो अभ्यारण प्रारम्भ करने की आवश्यकता है. सबसे पहला गो अभ्यारण मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के द्वारा 2 करोड़ खर्च कर प्रारम्भ किया गया है.

# पंचगव्य डिप्लोमा

पंचगव्य डिप्लोमा पाठयक्रम 1 साल का पंजाब में प्रारम्भ करने पर युवाओं को 30,000 रु. प्रतिमाह का स्वरोजगार प्राप्त हो सके.

1 जनवरी 2013 से श्री निरंजन वर्मा जी अभियंता के द्वारा चेन्नई में पंचगव्य डिप्लोमा 1 साल का प्रारम्भ किया गया है.

# जैविक बोर्ड

पंजाब में मुख्यमंत्री के द्वारा विधानसभा में जैविक बोर्ड का प्रस्ताव तुरन्त ही पारित करवाना है जिससे पंजाब जैविक राज्य बन जाये.

2015 में सिक्किम पहला जैविक राज्य बन जायेगा.

# पाकिस्तान

साहीवाल नस्ल के गोवंश को लाम्बीवार, लोला, मुल्तानी, तेली आदि क्षेत्रीय नामों से भी जाना जाता है. साहीवाल का प्रमुख घर पाकिस्तान के पंजाब की रावी नदी के पास में है जो नीली बार के नाम से प्रसिद्ध है. साहीवाल गाय माता भारत तथा पाकिस्तान की सर्वोच्च दूध देने वाली नस्लों के रुप में जानी जाती हैं.

जंगली जाति के लोग साहीवाल नस्ल को बहुत ही ध्यान से पालते हैं. जंगली के लिये साहीवाल आय का मुख्य साधन भी है. किसान अपने खेत में कम से कम 2 या 3 साहीवाल रखते हैं. बडे धनी लोग भी बहुत विशाल क्षेत्र खरीद कर ज्यादा संख्या में साहीवाल नस्ल पालते हैं. पाकिस्तान के घनी जनसंख्या वाले नगरों में दूध के लिये साहीवाल बहुत ही अधिक पायी जा रही है.

17 देशों में बहुत बडी संख्या में दूध के लिये ही विकसित किया जा रहा है.

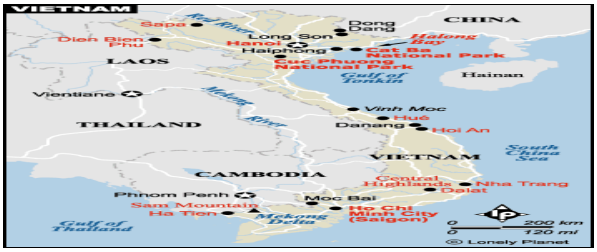


वियतनाम

# ब्राजील

ब्राजील में साहीवाल नस्ल का संवर्धन सबसे अधिक किया गया है. ब्राजील के पास भारत से 6 गुना अधिक भूमि है. जनसंख्या भारत से छटवा भाग है. ब्राजील की अर्थव्यवस्था में साहीवाल का योगदान है.

ब्राजील हर तरह से साहीवाल के विकास करने के लिए लगा है. साहीवाल नस्ल ब्राजील में बहुत अधिक दूध देती है.

जमायका

जमायका में साहीवाल नस्ल की गाय को जर्सी से क्रोस करवाकर जमायका होप नस्ल के कुछ समूह बनाये गये थे.

# आस्ट्रेलिया

1950 में ओस्ट्रेलिया में साहीवाल पहली बार आयी थी.

1960 में ओस्ट्रेलिया में साहीवाल का उपयोग

ओस्ट्रेलियन फ्रीजियन साहीवाल नस्ल तैयार करने के लिये किया जा रहा है. आस्ट्रेलिया में अधिक दूध उत्पादन करने के लिये साहीवाल एवं

सींधी को अधिक दूध देने वाली

जर्सी के साथ के मिलाकर नयी नस्ल तैयार की गयी है. मांस के लिये साहीवाल नस्ल का उपयोग आस्ट्रेलिया में किया जा रहा है.

मलेशिया

फिलीपाइन्स

श्रीलंका

नेपाल

थायलेंड

मयांमार

केन्या

केन्या के साहीवाल नस्ल के सांडों का उपयोग छोटे पूर्वी अफ्रीकन जेबू क्षेत्रीय गोवंश से अनुक्रमिक विधि द्वारा संसर्ग करवाकर अत्यधिक दुग्ध उत्पादन बढाने में किया गया था.

तंजानिया

त्रिनीदाद

बंगलादेश, न्यूजीलैंड, मोरिशश, सियरा लियोन में साहीवाल पर निरन्तर अनुसंधान जारी है.

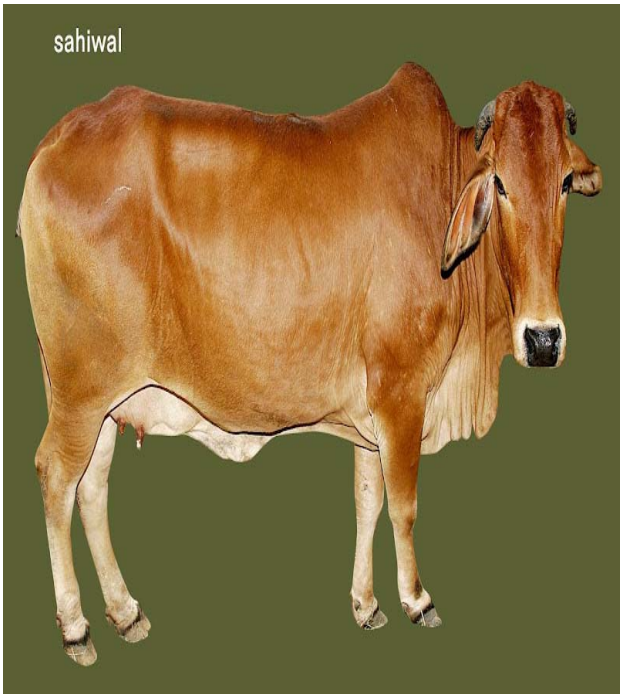

ओस्ट्रेलिया के क्वींसलेंड में साहीवाल नस्ल के जनन द्रव्य का वृहद उत्पादन करने के लिये न्यूजीलैंड की आवश्यकता पूर्ति करने के लिये कार्य चल रहा है.

न्यूजीलेंड में साहीवाल नस्ल के वीर्य द्वारा जर्सी और होलीस्टीन फ्रीजियन गायों को गर्भित करवाकर संकर ओसर का उत्पादन व्यवसायिक निर्यात हेतु दक्षिण पूर्वी एशियन देशों थाइलेंड, फिलीपाइन्स, मलेशिया, इंडोनेशिया के लिये किया गया.

पुराने समय में साहीवाल गाय के दूध देने के किर्तीमान वर्तमान में प्रोत्साहित करने के लिए काफी हैं.

इंडियन फार्मिंग अक्तूबर 1942 के अनुसार पंजाब में जहांगीराबाद कैटल फार्म में जलाली साहीवाल गाय ने 14.4.1933 को 7176 पौंड, 27.4.1934 को 7335 पौंड, 16.5.1935 को 11721 पौंड, 21.12. 1936 को 11568 पौंड, 21.5.1938 को 10144 पौंड, साहीवाल नस्ल की नयेगास नाम की गाय माता ने 4.2.1934 को 9,602 पौंड, 13.6.1935 को 5085 पौंड एवं 8.7.1936 को 14010 पौंड, 7.1. 1938 को 11,699 पौंड, 10.3.1940 को बहुत ही अधिक दूध दे रही हैं.

दिल्ली में आयोजित आल इंडिया कैटल शो में लगातार 3 सालों तक पुरुस्कार फिरोजपुर मिलट्री डेयरी फार्म की मुदीनी साहीवाल गाय माता ने जीते थे.

1940 में तृतीय प्रदर्शन में सर्वश्रेष्ठ गाय माता के रुप में पुरुस्कार जीता था. 1941 में चौथे प्रदर्शन में 51 पौंड दूध देकर कप जीता था.

1942 में 5 वें प्रदर्शन में 47.पौंड दूध देकर एक साथ चार पुरुस्कार जीते थे.

साहीवाल नस्ल की नोगनी नाम की गाय माता ने 1.11.1935 को 6,697 पौंड, 25.1.1937 को 7690 पौंड, 27.4.1938 को 6,380 पौंड, 9.4.1939 को 6,135 पौंड और 29.10.1940 को 14692 पौंड दूध देकर नये आयाम बनाये थे.

कुछ गोपालक विभाजन के बाद में भारत में रह गये थे. भारत में रह रहे गोपालकों ने पूरे समय साहीवाल गोपालन कर आजीविका चला रहे हैं.

साहीवाल में

गीर तथा अफगानिस्तान का खून पाया जाता है. साहीवाल क्षेत्र में एक समय बहुत बडी संख्या में काठियावाडी तथा राजपूताना गोपालक आये थे जिसके कारण ही साहीवाल नस्ल में

गीर का खून पाया जाता है.

साहीवाल नस्ल को पहले मान्टगुमरी के नाम से ही जाना जाता था.

साहीवाल नस्ल की बहुत बडी संख्या मांटगुमरी वर्तमान में साहीवाल जिला में पायी जाती थी. साहीवाल नस्ल को खिलाने के लिये बारिश के बाद तुरन्त ही हरी घांस नदी के किनारे उपलब्ध हो जाती है.

किसान अपनी गेहूं, कपास, बारली, चिकपीस, लेंटीलस की खेती के बचे पदार्थ साहीवाल को खिलाते हैं.

साहीवाल के लिये हरे चारे के रुप में विविध पदार्थ उगाते हैं. मांटगुमरी क्षेत्र समानान्तर चतुर्भुज आकार का सतलज के किनारे का क्षेत्र है.

साहीवाल गाय मातायें पूरे विश्व में बहुत ही अधिक दूध देती हैं. पंजाब के मांटगुमरी जिले में तथा रावी नदी के आसपास लायलपुर, लोधरान, गंजीवार आदि स्थानों में साहीवाल गाय मातायें पायी जाती है.

भारत पाक सीमा में राजस्थान में श्री गंगानगर जिला, पंजाब में फिरोजपुर जिले के फाजिल्का और अंबोहर शहर में 70 गोवंश और अमृतसर जिले में साहीवाल नस्ल शत प्रतिशत शुद्ध पायी जाती हैं.

राजस्थान प्रदेश नहरों से जुडे होने के कारण भूमि का अत्यधिक उपयोग अनाज उत्पादन में प्रयुक्त होने के कारण चारागाह भूमि का क्षेत्र कम होने लगा है.

गोपालको ने श्रीगंगानगर और फिरोजपुर के विभिन्न शहरों में गोपालन कर दूध का व्यवसाय किया. शहरी आबादी से जुडे होने के कारण दुग्ध विक्रय हेतु बाजारों की उत्तम उपलब्धता रहने से गोपालक वहीं पर बस गये हैं.

साहीवाल गाय मातायें बहुत ही शांत स्वभाव की होती हैं. धीरे धीरे चलने वाली तथा चराई को पसंद करने वाली, कम खुराक खाने वाली होती हैं.

साहीवाल गाय माता का कद ठिगना होता है. साहीवाल गाय माताओं की उंचाई 48 से 50 इंच होती है. साहीवाल गाय माता के

दूध में

मक्खन बहुत ही अधिक निकलता है.

घी तैयार करने के लिये साहीवाल सर्वश्रेष्ठ गाय माता है.

साहीवाल गाय मातायें ब्याने के बाद 10 माह तक दूध देती हैं.

एक ब्यात यानी 300 दिनों में 80 मन यानी 3200 लीटर दूध देती है. साहीवाल नस्ल की अधिकतम दूध देने की अवधि 375 दिनों की है.

205 दिनों की कम अवधि दूध देने की है. औसत 310 दिनों का है. 1933 में गवर्मेंट मिलट्री डेयरी फार्म फिरोजपुर में बेली नाम की साहीवाल गाय माता ने 331 दिनों में 10,087 पौंड दूध दिया था.

सी.एल. फार्म नई दिल्ली में चानसुरी ने 255 दिनों में 8611 पौंड दूध दिया था. गर्वमेंट डेयरी फार्म तेलनखेरी नागपुर महाराष्ट्र में केतकी ने 289 दिनों में 7249 पौंड दूध दिया था.

300 दिनों में 14000 पौंड दूध देने का किर्तीमान भी है. श्री क्विर्के ने 1921 से 1938 तक वेटनरी विभाग में लगातार कार्य कर नई उंचाइयों को छुआ था. 1921 में मुख्य वेटनरी अधिकारी के रुप में कार्य कर डायरेक्टर के पद तक कार्य कर 1938 में मर गये.

साहीवाल को विश्व प्रसिद्ध आयरेशायर एवं फ्रीजीयन होलस्टीन की तुलना में खडा करने के लिये प्रयोग किये गये. दो ब्यातों का अंतर औसत 451 दिनों का अधिकतम 550 दिनों का तथा कम से कम 390 दिनों का है.

जन्मकाल में नर बच्चे का भार 20 से 25 किलोग्राम है. मादा का भार 18 से 23 किलोग्राम है. साहीवाल नस्ल के नर की उंचाई 170, लम्बाई 150, छाती का गोलाकार नाप 190 सेन्टीमीटर है. व्यस्क नर का भार 540 किलोग्राम तथा मादा का भार 327 किलोग्राम औसत 301 से 360 किलोग्राम तक होता है.

अच्छी तरह पालने पर 300 दिनों में अधिकतम 4500 लीटर दूध का किर्तीमान साहीवाल गाय माता का है. साहीवाल गाय माता कम से कम प्रतिदिन 10 लीटर दूध देती है.

साहीवाल गाय माता के दूध में वसा 4.8 से 5.1 प्रतिशत औसत 4.93 प्रतिशत है. अच्छे आहार से साहीवाल के दूध में वसा बढायी जाती है.

साहीवाल गाय माता दूध का व्यापार करने वालों के लिये वरदान साबित हो रही है. साहीवाल गाय माता को उचित देखभाल करने पर कहीं भी पाला जा सकता है.

भारत में साहीवाल नस्ल सभी जगह उपलब्ध हो सकती हैं लेकिन वर्तमान में राजकीय प्रजनन केंद्रों तथा प्रक्षेत्रों में आई.ए.आर.आई, नई दिल्ली, पंतनगर, कानपुर, राजकीय पशुपालन विभाग, पंजाब, शासकीय गोवंश प्रजनन प्रक्षेत्र, नाभा, पिंजरापोल गोशाला, अमृतसर, पंजाब, शासकीय पशुधन प्रक्षेत्र हिसार, श्री गोशाला सोसायटी, पानीपत, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, सतगुरु हीरसिंह पशु प्रजनन प्रक्षेत्र, श्री जीवान नगर, सिरसा, हरियाणा, तमिलनाडू को-आपरेटिव दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, उद्यागमनडलम, तमिलनाडू, सैनिक प्रक्षेत्र, मेरठ, राजकीय पशुधन कृषि प्रक्षेत्र, चकगंजरिया, लखनउ, उत्तर प्रदेश, गोवंश प्रजनन प्रक्षेत्र, अंजोरा, दुर्ग, छतीसगढ, इमली खेरा, मध्यप्रदेश, शासकीय गोवंश प्रजनन प्रक्षेत्र, बोड, वाडसा, महाराष्ट्र, गोवंश प्रजनन प्रक्षेत्र जगदुआर, पचमहाल, सिलचर, आसाम, राजकीय पशुपालन विभाग, राजस्थान, शासकीय गोवंश प्रजनन प्रक्षेत्र, बेली, चराना, जम्म काश्मीर आदि राज्यों में बसाई गयी हैं.

1951 से साहीवाल नस्ल के गोवंश को राष्ट्रीय दुग्ध अनुसंधान संस्थान करनाल में और तृतीय पंचवर्षीय योजना में राजकीय पशुधन प्रक्षेत्र हिसार में स्थापित किया गया था.

इन प्रक्षेत्रों का प्रमुख उददेश्य शुद्ध नस्ल का विस्तार करके समूह बनाना, उत्तम आनुवांशिक जनन द्रव्य के सांडों को तैयार करना और उनका उनके गृह क्षेत्रों में तथा प्रयोगशाला विधियों द्वारा विस्तार गोवंश प्रजनन परियोजनाओं हेतु करना है.

साहीवाल गाय माता को बढावा देने के लिये केंद्र सरकार तथा राज्य सरकारें सक्रिय हुई है. भारत की श्रेष्ठ गाय माताओं में साहीवाल की गिनती की जाती है.

साहीवाल गाय की चमडी मुलायम और चिकनी, सींग छोटे लगभग 3 इंच के आसपास, गर्दन छोटी और मोटी, छाती चौडी और भरी हुई, कमर

चौडी और मजबूत होती हैं. पूंछ लम्बी पतली, लगभग जमीन को छुती हुई, मुलायम, घने बालों वाली होती है. साहीवाल गाय माता का रंग लाल, बादामी, सफेद धब्बेदार तथा काला रंग, पीठ सीधी, मजबूत, लम्बी, रीढ स्पष्ट उठी हुई होती है. कान बडे, लटकते हुए, लम्बे होते हैं. कानों में काले बालों की सघनता रहती है. आंखें स्निग्ध और गंभीर होती हैं.

साहीवाल गाय सफेद रंग की अच्छी नहीं मानी जाती है. साहीवाल के खुर साफ होते हैं. साहीवाल के थन सुडौल, लम्बे, एक से, गोलाकार, दूध की नसें बडी, लम्बी, लचकदार, और साफ दिखाई देने वाली होती हैं. गलकम्बल बडा और भारी होता है. नर में कूबड मांसल होता है तथा शारीरिक वृद्धि के साथ शीघ्र ही एक ओर झुक जाता है. नाभी पटिटका ढीली और लटकती हुई होती है. शिश्न कवच नर सांडों में झुलता हुआ होता है.

अत्यधिक दूध प्रदान करने वाली साहीवाल नस्ल के गोवंश में अयन झुलता हुआ होता है. आयन प्रमुखता में बडे आकार का उर्ध्वाकार, लचीला, शरीर से जुडा हुआ होता है. साहीवाल के पालने के समय गंदगी, धुंआ नहीं होनी चाहिये. गोशाला बस्ती से दूर समतल उंची भूमि पर हवादार तथा नदी के निकट हो तो बहुत ही अच्छा है.

गोशाला में गोचर भूमि अनिवार्य है. नागपुर में साहीवाल को सुरक्षित रखने के लिये प्रयास जारी हैं.

साहीवाल नस्ल के बैलों की जोडी 2 टन भार टार सडकों पर न्यूमेटिक टायर वाली बैलगाडियों में लाद कर 15 मील की दूरी 6 से 8 घंटे में तय कर लेते हैं.

साहीवाल नस्ल को पूरी तरह से विकसित करने के लिये बंगाल में सूरी, पंजाब में कांगडा जिला, फिरोजपुर, मोंटगुमरी, दीपालपुर, कबीर, लायलपुर, चक न. 45 एल.बी, बचरीयनवाला, चक 528 जी.बी, पवलीयन, बिहार में सोनेपुर, उडीसा में कटक, एन. डबलू. एफ.पी. में कोहाट में भव्य मेलों का लगातार आयोजन किया गया था. समय के साथ साहीवाल को भैंसों ने गांवों में हटा दिया है.